INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

31	Temporal Analysis of Vegetation by Vegetation Indices from Multi Dates Satellite Images : Application to Dindori Tahsil, Nashik District, Maharashtra.	**Sitaram Nikam & Dr. D. S Gajhans**	131
32	East-West Cultural Encounter in Chitra Bangerjee's Novel Oleander Girl	**Mr. Satish Funne**	136
33	Problems of Rural Migration in India	**Mr. B. S. Jogdand**	140
34	White Collar Crime in India	**Mr. Bandu Patekar**	143
35	Poverty in India	**Mr. Ganesh Walunj & Dr. Suhas Avhad**	146
36	Causes of Poverty and Remedies in Contemporary India	**Prof. Dattatraya Mundhe**	150
37	An Approach towards Social Security	**R. J. Gaikwad**	153
38	Sports Medicine in Human Health by Environment Provocation	**Ravindra Kharat**	156
39	Child Labour in Brick Kiln Industries	**Shaikh Jahara Abdul Rahim**	158
40	Main Causes of Economic Inequality in India	**Mr. Vaibhav Shendage**	162
41	Naxalism in India : A Revolution of Displaced Tribal People for Social Justice	**Shesherao Rathod**	166
42	Poverty in An Unorganised Sector	**Dr. Sonal Ubale**	170
43	Corruption : A Contemporary Problem in India	**Subhash Pole**	173
44	Modernization Beacon throughout Renovaton Task : Development in Literature Dissection	**Uday Kharat**	176
	हिंदी विभाग		
45	भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या	**डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे**	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या	**दीपक डोंगरे**	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नही	**प्रा. दीप्ती होळकर**	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर 'जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे	**डॉ. शशि बाला भट्ट**	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष)	**डॉ. अरविंद घोडके**	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम	**डॉ. जे.एस.धायगुडे**	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या	**डॉ. संगीता आहेर**	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	**डॉ. सय्यद शौकत अली**	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद	**डॉ. रजनी शिखरे**	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में)	**डॉ. ललिता राठोड**	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य	**डॉ. रजनी शिखरे**	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ	**डॉ. रजनी शिखरे, एच. टी. पोट कुले**	225
57	भारत में भ्रष्ट्राचार की समस्या	**डॉ. आर.के. देशमुख**	229
58	भ्रष्ट्राचार	**महादेव करडे**	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावारणीय प्रभाव	**किरण पवार, कविता जोशी**	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या	**डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर**	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल	**संतोष नागरे**	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में)	**डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव**	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या	**डॉ. रमेश व्ही.मोरे**	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध दिमर्श पर एक दृष्टि	**ऋचा राय**	257

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल

संतोष नागरे
सहा.प्रा.हिंदी विभाग,
र.भ.अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड (महाराष्ट्र)

प्रकृति सौंदर्य की दृष्टि से आधुनिक हिंदी कविता में प्रगतिशील काव्यधारा का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिशील काव्यधारा के कवियों ने अपनी जनपदीय प्रकृति और संस्कृति को अपनी जनभाषा के माध्यम से अभिव्यक्त किया। अत: वह अपने आप में आंचलिकता की गंध लिए हुए है। प्रगतिशील काव्यधारा के कवियों में सुमित्रानंदन पंत ने अपने पहाड़ी क्षेत्र 'अल्मोडा', नागार्जुन ने 'मिथिला', त्रिलोचना एवं डॉ. रामविलास शर्मा ने 'अवध' तो केदारनाथ अग्रवाल ने बुंदेलखण्ड की प्रकृति का सुंदर चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्षस्थ कवि- केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति को किसान की स्वस्थ नजर से देखते हैं। बुंदेलखण्ड का ग्रामीण प्राकृतिक परिवेश केदार को रोमांटिक, सौंदर्यवादी एवं स्वच्छंदतावादी बनाता है। केदार का प्रकृति चित्रण मुख्यत: श्रमजीवियों के साथ जुड़ा होने से उसमें कर्म, श्रम और पसीने का सौंदर्य है। बुंदेलखण्ड की उबड़- खाबड़ जमीन, नग्न टुनटुनिया पहाड़ी, केन नदी का कल-कल निनाद, थंडी हवाएँ, सूर्य की किरणें, धूप, फूल, पेड़, पौधें, फसलें - गेहूँ, चना, सरसों, अलसी के यथार्थ अंकन से केदार की कविताओं में बुंदेलखण्ड की मिट्टी की सोंधी महक आती है। डॉ. रणजीत इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "बुंदेलखण्ड की प्रकृति का भाव-भीना वर्णन करनेवाली कवि की कई प्रकृति सम्बन्धी कविताओं को देखते हुए उसे बुंदेलखण्ड के ग्राम्य जीवन का आंचलिक कवि कहा जा सकता है।"[1] बुंदेलखण्ड का समग्र प्राकृतिक परिवेश केदार की कविताओं में पुन:जीवित होकर जगमगा उठता है। डॉ. मधुच्छदा इस संदर्भ में ठीक ही कहती हैं,- "गाँव की प्रकृति ने मानो केदारनाथ की कविताओं में अपना घूँघट खोल दिया है और उसके अजग्र सौंदर्य से केदार की कविताएँ जगमगा उठी हो।"[2]

सदियों से प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे के सहयोगी होने से उनमें रागात्मक रिश्ता रहा है। केदार की कविताओं में प्रकृति और मनुष्य के सहज सम्बन्धों की सहज अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। 'धूप' कविता में केदार धूप और सरसों को मानवीय संस्पर्श प्रदान करते हैं। मायके में आयी धूप अपनी हमजोली सखि सरसों से उसीप्रकार लिपट जाती है, जैसे कई दिनों के बाद मिली सखियाँ एक-दूसरे से मिलती है। केदार कहते हैं,-

"धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आयी बेटी की तरह मगन है।
फूली सरसों की छाती से लिपट गयी है,
जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली है।"[3]

धूप केदार का प्रिय प्राकृतिक उपादान होने से उसके कई चित्र आपकी कविताओं में देखने को मिलते हैं। सूरज की किरणों में नवनिर्माण की शक्ति होने से वह प्रकृति को जीवन - रस प्रदान करते हैं। सदियों से समाज जीवन में व्याप्त अज्ञान, अंधश्रध्दा, सामाजिक- धार्मिक पाखण्ड तथा शोषण के अंधकार रुपी काले साम्राज्य को मिटाकर केदार स्वातंत्र्य एवं समता का उजाला चाहते हैं। अत: केदार सूर्य के स्वागत के लिए तत्पर दिखाई देते हैं,-

"अब ज्यों की सूरज निकलेगा
मैं स्वागत / तत्काल करुँगा।"[4]

प्रकृति के साथ अभिन्न रुप से जुड़े केदार खेत, खलिहान, पेड़, पौधें, सोन चिरैया, केन नदी आदि से अलग नहीं होना चाहते। सूर्यास्त के बाद घिर आयी रात केदार को प्राकृतिक उपादानों से अलग करती है। अत: प्रकृति प्रेमी कवि केदार को 'रात' में कोई विशेष बात नजर नहीं आती। केदार कहते हैं,-

"दिन हिरन- सा चौकड़ी भरता चला
धूप की चादर सिमटकर खो गयी,
खेत, घर, वन, गाँव का / दर्पण किसी ने तोड़ ड़ाला,
शाम की सोन-चिरैया / नीड़ में जा सो गयी,
पेड़- पौधे बुत गये जैसे दिये,
केन ने भी जॉघ अपनी ढॉक ली,
रात है यह रात, अंधी रात, / और कोई कुछ नहीं है बात!"[5]

केदार प्रकृति को किसान की नजर से देखते हैं। 'चंद्रग्रहना से लौटती बेर', 'बसंती हवा', 'गेहूँ', 'खेत का दृश्य' आदि कविताएँ कवि की किसान जीवन के प्रति गहरे लगाव की दयोतक है। डॉ.लल्लनराय इस संदर्भ में कहते हैं,- "ग्राम प्रकृति का वास्तविक किसानी रुप हमें केदारनाथ अग्रवाल में मिलता हैं। प्रकृति के साथ ही बुंदेलखण्ड की किसान चेतना और उसकी जन संस्कृति को इन्होंने सफलतापूर्वक प्रतिबिम्बित किया है।"[6] हरी-भरी फसलों से श्रृंगार कर, आसमान की ओढ़नी ओढे धरती राधा बनकर नाच रही है, तो पेड़, पौधें, फसलें हवा में लहराते, तालियाँ बजाते हुए उसका साथ दे रही हैं। खेत के इस नर्तन-उत्सव में किसान अपनी सुध-बुध खोकर प्रेम-रस में डूब गया है। किसान का धरती के प्रति असीम लगाव तथा उसका तन्मयता को बयान करते हुए केदार कहते हैं,-

"आसमान की ओढ़नी ओंढ़े, / धानी पहने / फसल घँघरिया,
राधा बन कर धरती नाची, / नाचा हँसमुख / कृषक सँवरिया।
माती थाप हवा की पड़ती, / पेड़ों की बज / रही ढुलकिया,
जी-भर फाग पखेरु गाते, / ढरकी रस की / राग-गगरिया!
मैंने ऐसा दृश्य निहारा, / मेरी रही न / मुझे खबरिया,
खेतों के नर्तन - उत्सव में, / भूला तन-मन / गेह डगरिया।"[7]

प्राकृतिक उपादानों को मानवीय संस्पर्श प्रदान करते हुए केदार अपनी जन-संवेदना से कभी विमुख नहीं होते-जो उनकी कविता की सबसे बड़ी विशेषता है। इसी विशेषता के कारण केदार की सौंदर्य-प्रियता छायावाद से पृथक अपना अस्तित्व रखती है। 'गेहूँ', 'पेड़ का हाथ', 'घन-जन', 'समुद्र वह है' तथा 'तेज धार का कर्मठ पानी' आदि कविताएँ प्रकृति के माध्यम से शोषणकारी व्यवस्था के विरुध्द शोषित-पीड़ित जनता की संघर्षगाथा को बयान करती है। 'गेहूँ' अपनी पूर्ण ताकद के साथ शोषणकारी व्यवस्था के विरुध्द लड़ते हुए मर मिटने के लिए झूम रहा है। 'घन-जन' कविता में जनता शोषणकारी व्यवस्था के विरुध्द घन की तरह गरज रही है। समुद्र अपना मौन छोड़कर लहरों की चोट से तो तेज धार का कर्मठ पानी शोषणकारी व्यवस्था की चट्टानों को घूँसे मार कर तोड़ रहा है। यहाँ मनुष्य के साथ प्रकृति भी परिवर्तन के लिए संघर्षरत दिखाई देती है। केदारनाथ अग्रवाल कहते हैं,-

"तेज धार का कर्मठ पानी, / चट्टानों के उपर चढ़कर,
मार रहा है / घूँसे कस कर / तोड़ रहा है तट चट्टानी!"[8]

प्रकृति के कठोर और कोमल दोनों रुपों का सुंदर समन्वय केदार की कविताओं में दृष्टिगत होता है। नंदकिशोर नवल इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "प्रकृति और मनुष्य के संघर्षशील रुप के साथ उनके मधुर रुप का चित्रण करके अपनी सौंदर्य दृष्टि की व्यापकता का परिचय दिया है।"[9] 'बसंती हवा', 'वर्षाश्री', 'हवा पहनकर तुम चलती हो' कविता के

माध्यम से नारी सौंदर्य को अभिव्यक्ति मिली है। ग्राम प्रकृति के साथ दंगा- मस्ती करती 'बसंती हवा' किसान की एक अल्हड़ छोकरी के रुप में आयी है, जो स्वच्छंद है। 'हवा पहनकर तुम चलती हो' कविता में हवा के स्पर्श से कवि को अपनी पत्नी-प्रिया के स्पर्श की अनुभूति होती है। हवा के स्पर्श से कवि के साथ-साथ प्रकृति भी झूम उठती है। केदारनाथ अग्रवाल कहते हैं,-

"हवा पहनकर तुम चलती हो
इसलिये यह हवा जब देह से लगती है
मुझे तुम्हारा ही आलिंगन मिल जाता है
और मुझे यह सुना वन भी
बड़ा रुचिर मालूम होता है / अतः चलो तुम
हवा पहनकर रोज चलो तुम
तरु गन झूमें / लहरें आकर तट को चूमें
मैं भी झूमूँ / तुमको चुमूँ।"[10]

'चोली फटी सरस सरसों की' तथा 'नदी एक नौजवान ढीढ लड़की है' कविता में कवि ने नारी सौंदर्य का मांसल चित्रण किया है, जो उनके रीतिकालीन काव्य संस्कारों को दर्शाता है। केदार मूलतः प्रकृति सौंदर्य के ही कवि हैं, नारी सौंदर्य के नहीं। कृष्ण मुरारी इस संदर्भ में कहते हैं,- "केदार के लिए सौंदर्य मूलतः प्रकृति में हैं। नारी सौंदर्य उनके लिए गौण है। यह उनके सम्पूर्ण काव्य का अवलोकन करके ही समझा जा सकता है।"[11] खजुराहों के मंदिर में नर-नारियों की मिथुन-मुद्राएँ देखने की अपेक्षा केदार गुलाबी बुँदियों से खिली बोगनबेलियाँ देखना पसंद करते हैं। जिससे केदार के प्रकृति - प्रेमी रुप की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। केदार कहते हैं,-

"जगह-ब-जगह / लॉन पर खड़े हैं
पेड़ बोगनबेलिया के / आदमकद / खिले
इकदम खिले / फूल-फूल हो गये खिले
सफेद - गुलाबी बुँदियों के / मैं देखता हूँ इन्हें
और कुछ नहीं देखता।
जबकि लोग / कामातुर मुर्तियाँ देखते हैं / मन्दिरों की
नर और नारियों की / मिथुन-मुद्राएँ देखते हैं।"[12]

केदार पेड़ों को पृथ्वी के वंशज तथा मानव के अग्रज के रुप में देखते हैं। केदार ने बबूल, पलाश, गुलमोहर, सेमल, नीम आदि का सुंदर चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। पेड़ मनुष्य को जीवन जीने की कला सीखाते हैं। खिलना, फूलना, फलना और झरना यह पेड़ की तरह मनुष्य जीवन की नियति तथा यथार्थ है। अपने गाँव की मिट्टी से उपजा नीम केदार को गत जीवन की कटु बातें तथा इतिहास सुनाता है। यहाँ पेड़ों के सानिध्य से कवि को ऊर्जा मिलती है। जिनकी छत्र-छाया से कवि का जीवन निखर उठा है। केदार कहते हैं,-

"यहाँ नीम के पेड़ खड़े इतिहास सुनाते।
कटु देहाती गत जीवन की बात बताते।।
यह है मेरा गाँव यहाँ का मैं वासी हूँ।
नीम, आम, महुए के विरवों का साथी हूँ।।
मेरा तन उसकी माटी से गढ़ा गया है।
मेरा तन इसके सुख-दुःख से मढ़ा गया है।।

मेरे ऊपर इसकी माया की छाया है।
गुण-अवगुण मैंने इसके ही तो पाया है।।"[13]

केन नदी केदार के प्रकृति सौंदर्य का महत्वपूर्ण घटक रहा है। केन नदी कवि के आत्म-प्रसार की नदी है। केन नदी केदार की कविताओं में पत्नी-प्रिया तथा जीवनसंगिनी के रुप में चित्रित है। 'बैठा हूँ इस केन किनारे', 'आज नदी बिल्कुल उदास थी', 'हे मेरी तुम सोयी सरिता', 'पहाड़ की गोद में बह रही नदी', 'तू जल गहरी भरी नदी है', 'केन किनारे' आदि कविताएँ इसका प्रमाण हैं। कवि केदार अपना तन-मन वारे, दुख-द्वन्द्व विसारे केन किनारे बैठे हैं। केदार अपने प्रेम भाव को वाणी देते हुए कहते हैं,-

"वह चिड़िया जो - / चोंज मार कर
चढ़ी नदी का दिल टटोल कर
जल का मोती ले जाती है
वह छोटी गरबीली चिड़िया
नीले पंखोंवाली मैं हूँ
मुझे नदी से बहुत प्यार है।"[14]

बुंदेलखण्ड के प्राकृतिक परिवेश का सुंदर चित्रण केदार जी ने अपनी रचनाओं में किया है। केदार की प्रकृति सम्बन्धी रचनाएँ प्रगति की सूचक है। आधुनिक हिंदी कविता में सुमित्रानंदन पंत के पश्चात केदार की कविताओं में ही ग्रामीण प्रकृति का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है। डॉ.बच्चनसिंह इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "जहाँ तक प्रकृति का सम्बन्ध है, केदार छायावादोत्तर कविता के सुमित्रानंदन पंत है।"[15] मानव जीवन के साथ अभिन्न रुप से जुड़े होने के कारण केदार की प्रकृति सम्बन्धी रचनाओं की कोई बराबरी नहीं कर सकता। केदारनाथ अग्रवाल स्वयं कहते हैं,-

"हम यहीं रहते हैं / न पूछो : कहाँ ?
मनस्वी आकाश / के नीचे, / नदिया
पहाड़ों के बीच, / दुधार नदियों के साथ,
खेलते, / कूदते, / हँसते-गाते, / जीते।
कोई है / जो हमारी / बराबरी कर सके!"[16]

निष्कर्ष :

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्षस्थ कवि हैं। प्रकृति, प्रेम और सौंदर्य केदार के काव्य का स्थायी भाव है। बुंदेलखण्ड का ग्रामीण प्राकृतिक परिवेश केदार की कविताओं में प्रतिबिम्बित हुआ है। केदार प्रकृति को किसान की नजर से देखते हैं। अत: आपके काव्य में खेतों में लहराती फसलें, पेड़, पौधें, बादल, हवा, वर्षा, सूरज की किरणें, हरियाली, टुनटुनियाँ पहाड़ी तथा केन नदी के कई सुंदर चित्र देखने को मिलते हैं। रीतिकालीन काव्य और प्रगतिशील काव्यधारा के प्रभाव स्वरुप केदार की कविता में नारी सौंदर्य और श्रम सौंदर्य का अपूर्व समन्वय देखने को मिलता है। केदार का प्राकृतिक परिवेश उन्हें रोमांटिक, सौंदर्यवादी तथा स्वच्छंदतावादी बनाता है। केदार का प्रकृति चित्रण श्रमजीवी वर्ग के साथ अभिन्न रुप से जुड़ा होने से उसमें कर्म, श्रम और पसीने का सौंदर्य छलकता है। केदार प्राकृतिक उपादानों को मानवीय संस्पर्श प्रदान करते हुए जनभावनाओं को बयान करते हैं, जिससे बुंदेलखण्ड का प्राकृतिक परिवेश पुन: जीवित हो उठाता है। अपनी इसी विशेषताओं के कारण केदार की प्रकृति सम्बन्धी रचनाओं का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। कुल मिलाकर केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति सौंदर्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

१. डॉ. रणजीत, हिंदी के प्रगतिशील और समकालीन कवि, पृ.99
२. डॉ. मधुच्छदा, श्रम का सौंदर्यशास्त्र और केदारनाथ अग्रवाल का काव्य, पृ.97
३. केदारनाथ अग्रवाल, फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ.65
४. केदारनाथ अग्रवाल, खुली आँखें: खुले डैने, पृ.60
५. केदारनाथ अग्रवाल, फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ.60
६. डॉ. लल्लनराय, हिंदी की प्रगतिशील कविता, पृ.130
७. केदारनाथ अग्रवाल, फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ.33
८. केदारनाथ अग्रवाल, फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ.99
९. डॉ. नंदकिशोर नवल, शब्द जहाँ सक्रिय हैं, पृ.21
१०. सम्पा. अशोक त्रिपाठी, जमुन-जल तुम, पृ.94
११. सम्पा. श्रीप्रकाश, केदार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ.37
१२. सम्पा. अशोक त्रिपाठी, कुहकी कोयल खड़े पेड़ की देह, पृ.144-145
१३. सम्पा. अशोक त्रिपाठी, कुहकी कोयल खड़े पेड़ की देह, पृ.241
१४. केदारनाथ अग्रवाल, फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ.103
१५. डॉ.बच्चनसिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, पृ.416
१६. केदारनाथ अग्रवाल, फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ.136